ICIMOD

कैलाश पवित्र भूमि संरक्षण एवं विकास पहल (KSLCDI)

प्रकृति आह्वान

कैलाश पवित्र भूमि में जैव विविधता प्रबंधन के लिए स्थानीय स्तर पर सीमा-पार से होने वाला विनिमय – भारत व नेपाल

दिनांकः १३-१५ दिसंबर २०१५

स्थानः पिथौरागढ, उत्तराखंड, भारत

पृष्ठ भूमि

कैलाश पवित्र भूमि संरक्षण एवं विकास पहल (KSLCDI) एक सीमा पार के सहयोग से होने वाला कार्यक्रम है जिससे नेपाल,भारत व चीन के आपसी विमर्श से निरूपित क्षेत्र में भूमि संरक्षण की अवधारणा को प्रयोग में लाया जाता है।इसे चीन, भारत व ने पाल की परामर्शक कार्य विधि के आधार पर कै लाश पवित्र भूमि संरक्षण एवं विकास पहल (KSLCDI) ने कई रणनीतिक हस्तक्षेपों में निवेश किया है जो कि पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं के साथ-साथ रोजगार संबंधी सेवाओं को एकीकृत करता है।

कैलाश पवित्र भूमि (KSL) में जैव विविधता एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह भोजन, ईंधन, आश्रय के प्रावधान से लेकर तीर्थ यात्रा और पर्यटन सहित सांस्कृतिक सेवाओं तक अनगिनत पारिस्थितिक से वाएँ प्रदान करता है। यह भूमि असंख्य महत्वपूर्ण औ षधीय पौधों व गैर लकडी वन उत्पादों सहित कई पौ धों की जातियों का आवास स्थान है जो कि उस भूमि के स्थानीय निवासियों की आय का प्रमुख साधन है। यह भूमि प्राणिजात विविधता जैसे हिम तेंदुआ (पैंथरा उनिआ), नीली भेड (स्युडोईस नायुर), जंगली याक (बाँस म्युटस), तिब्बती मृग (पैंथोलॉप्स हॉजसॉनी) तथा काली गर्दन वाली क्रेन (ग्रस नाइग्रीकौलिस) जैसी प्रमुख प्रजातियों के रूप में भी अत्यंत सम्पन्न है।

प्राकृतिक संसाधनों पर समुदायों की अत्यधिक आर्थिक निर्भरता होने से,विशेष रूप से औषधीय प्रजातियों जैसे यार्सा गुम्बु (ओर्फीयोकोर्डिकेप्स साइने सिस) की अस्थिर कटाई से इसके परिणामों में नुकसान होता है। इसके अतिरिक्त अवैध शिकार वन्यजीव एवं पेड-पौधों का गैर कानूनी तरीके से व्यापार होने से दोनों देश भारत व नेपाल के कै लाश पवित्र भूमि (KSL) में जैव विविधता के संर क्षण को गंभीर खतरा है। वन्यजीव उत्पादों से अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत अधिक मूल्य प्राप्ति हो ती है जिसकी वजह से गरीबी के कारण उच्चतम बाजार मूल्य,अत्यधिक माँग के साथ साथ कमजोर कानून प्रवर्तन से अवैध शिकार व अवैध व्यापार को बढावा मिलता है। सीमा के दोनों ही तरफ इन मुद्दों को सम्बोधित करने के लिए कुछ औपचारिक प्रक्रियाएँ हैं जैसे वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो व स्थायी गैर लकडी वन उत्पाद (NTFP) फसल कटाई नीतियाँ। सामुदायिक स्तर पर इन प्रक्रियाओं को लागू करने के लिए स्थानीय समुदायों ओर स्थानीय सरकारों दोनों के बीच सक्रिय सामुदायिक जुडाव की आवश्यकता होती है।

सन 2018, में कैलाश पवित्र भूमि संरक्षण एवं विकास पहल (KSLCDI) ने नेपाल के खालंगा, दारचुला जिला, कैलाशपवित्र भूमि (नेपाल व भारत) में सीमा पार के जैव विविधता प्रबंधन के अनुभव के आदान-प्रदान का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से यार्सा गुम्बु से सम्बंधित मुद्दों पर बातचीत हुई जिसके परिणामस्वरूप यार्सा गुम्बु के स्थायी प्रबंधन पर सामुदायिक स्तर पर एक समझौता हुआ । इस सीमा-पार कार्यक्रम ने यार्सा गुम्बु से सम्बंधित शो ध की आवश्यकताओं को स्पष्ट करने का मार्ग प्रशस्त किया जिसे कैलाश पवित्र भूमि KSL-भारत (चिपले केदार) एवं कैलाश पवित्र भूमि KSL-नेपाल (भजांग व दारचुला) ने जून 2019 में आयोजित एक क्षेत्रीय कार्यक्षेत्र के अनुसंधान के माध्यम से लागू किया। इसके साथ ही इस सीमा-पार कार्यक्रम ने दो नों देशों के समुदायों के मध्य विनिमय संगोष्ठी की निरंतरता को स्वीकार किया। इसलिए इस वर्ष यह कार्यक्रम निम्नलिखित लक्ष्यों के साथ पिथौरागढ, उत्तराखंड,भारत में आयोजित किया जा रहा है।

लक्ष्य

यह सीमा-पार "प्रकृति आह्वान" मंच जैव विविधता प्रबंधन से सम्बंधित चुनौतियों पर विचार करने के लिए नागरिक समाज व प्रशासनिक अधिकारियों को एक साथ लाएगा एवं विशेष रूप से इस भूमि में सीमा-पार की प्रासंगिकता से जुडे आलोचनात्मक मुद्दों के समाधान की पहचान करेगा। विषय विशेषज्ञ व जैव विविधता प्रबंधन के क्षेत्र में काम करने वाले संगठनों से एवं जिला व राज्य के आधिकारिक कार्यालय से तकनीकी सहायता प्रदान की जाएगी।

कार्यशाला के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- 2018 के समुदाय समझौते पर पुन: विचार करें एवं वनस्पति व जीवजंतुओं के अवैध व्यापार को सम्बोधित करते हुए स्थायी जैव विविधता प्रबंधन की पुन: पुष्टि करें।
- 2019 के यार्सा गुम्बु कार्यक्षेत्र शोध के निष्कर्षों को साझा करें व उन्हें प्रमाणित करें।
- नागरिक वैज्ञानिकों को कैलाश पवित्र भूमि में सांस्कृतिक विरासत की निगरानी के लिए मो बाइल एप्लिकेशन को प्रयोग में लाने का प्रशिक्षण दिया जाए।

प्रतिभागियों:

भारत: वन पंचायत स रुँग समुदाय स स्थानीय सरकारस उत्तराखंड वन विभागस जी बी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान (GBPNISHED), भारतीय वन्य जीव संस्थान (WII), केंद्रीय हिमालयी पर्यावरण संघ (CHEA),

नेपाल: ANCA परिषदस ANCA कर्मचारीस स्थानीय सरकारस जिला वन कार्यालयस प्रादेशिक मंत्रालयस राष्ट्रीय निकुंज तथा वन्यजंतु संरक्षण विभाग (DNPWC)स हिमालय ग्रामीण प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन महिला समूह (हिमवंती) (HIMAWANTI)

क्षेत्रीय: दक्षिण एशिया वन्यजीव प्रवर्तन संघ (SAWEN) एवं एकीकृत पर्वतीय विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (ICIMOD)

कार्यक्रम अनुसूची

दिनांक टिप्पणी	दिन	कार्यक्रम
11-12 दिसंबर	बुधवार / बृहष्पतिवार	पिथौरागढ की यात्र
13 दिसंबर	शुक्रवार	**प्रात:** • स्वागत • कार्यशाला के उद्देश्य व अपेक्षित जानकारी • प्रतिभागियों का परिचय • 2018 के सीमा-पार फोरम के समझौते और प्रगति पर पुन: विचार • 2019 के यार्सा गुम्बु के कार्यक्षेत्र के शोध का निष्कर्ष (विषय सूचना) एवं सामूहिक चर्चा की प्रस्तुति
		अपराह्न • महाकाली में वन्यजीव व्यापार: मुद्दे, चुनौतियाँ और आगे • सामूहिक चर्चा
14 दिसंबर	शनिवार	**प्रात:** • गैर लकडी के वन उत्पाद एवं औषधीय पौधे: सीमा-पार के मुद्दे व आगे बढने के रास्ते • सामूहिक चर्चा
		अपराह्न • विस्तृत जैव विविधता प्रबंधन को सुनिश्चित करना: प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन (NRM) योजना में लिंग व सामाजिक समावेश • अनुभव साझा करना एवं सामूहिक चर्चा
15 दिसंबर	रविवार	**प्रात:** • कैलाश पवित्र भूमि (KSL) में सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं की निगरानी के लिए नागरिक विज्ञान • पृष्ठ भूमि + मोबाइल एप्लिकेशन प्रशिक्षण
		अपराह्न • मोबाइल एप्लिकेशन का प्रयोग करने के लिए सांस्कृतिक विरासत स्थल का भ्रमण
16-17 दिसंबर	सोमवार / मंगलवार	• गंतव्य वापसी

In collaboration with

International Centre for Integrated Mountain Development
GPO Box 3226, Kathmandu, Nepal
T +977 1 5275222 | **E** info@icimod.org | **www.icimod.org**